वार्तालाप.436, हैद्राबाद (आं.प्र.), दिनांक.10.11.07
Disc.CD No.436, dt. 10.11.07 at Hyderabad (Andhra Pradesh)

समय – 19.30–21.55
जिज्ञासु – बच्चे भी अतीन्द्रिय सुख अनुभव कर सकते हैं (क्या) थोड़ी देर के लिये?
बाबा – अतीन्द्रिय सुख अंत समय का गायन है या वर्तमान समय का गायन है? किस समय का गायन है? अंत समय का गायन है। अंत तब होता है जब 63 जन्मों के हिसाब–किताब पूरे हो जाते हैं। कोई भी दुष्ट संस्कार आत्मा में न रहे। सारे पाप–शाप भस्म हो जाये तब इन्द्रियों का लगाव समाप्त हो जायेगा। कर्मातीत कहे जायेंगे। कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हुये भी आनन्द की स्टेज में रहेंगे। लेकिन वो अतीन्द्रिय सुख होगा, इन्द्रियों का सुख नहीं होगा। इन्द्रियों ने जैसे कर्म किया नहीं किया, जैसे बराबर हो गया। अभी वर्तमान में कोई कहे कि – हमको आनन्द, ईश्वरीय आनन्द की अनुभूति होती है, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है – तो कहेगे कुछ मुगालते में है। सच्चाई कुछ और है, जो अंत में सामने आवेगी।

Time: 19.30-21.55
Someone asked: (Can) the children also experience super-sensuous joy (*ateendriy sukhh*) for some time?
Baba replied: Is super-sensuous joy famous during the last period or is it famous during the present period? It is a praise of which time? It is a praise of the last period. The end comes when the karmic accounts of all the 63 births are over. There should not remain any wicked *sanskars* in the soul. All the sins should be destroyed. Then the attachment of the organs will end. (Then) they will be called as *karmaateet*. Even while performing actions through the bodily organs, they will remain in a stage of bliss. But that will be super-sensuous joy and not the joy of bodily organs. The performance or non-performance of actions by the organs will be one and the same. If anyone says now that we are experiencing bliss, Godly bliss, super-sensuous joy, then it will be said that they are under some misunderstanding. Truth is something else, which will be known in the end.

जिज्ञासु – अभी एक मिनट के लिये भी नहीं होगा?
बाबा – एक सेकण्ड के लिये भी अतीन्द्रिय सुख में नहीं रह सकता कोई। अतीन्द्रिय सुख एक बार आरम्भ होगा तो 2500 वर्ष तक काबिज रहेगा। अल्पकालीन सुख नहीं है। इन्द्रियों का सुख होता है अल्पकाल का। और अतीन्द्रिय सुख होता है सदाकाल।

Someone asked: Can't it be possible (to experience) even for a minute?
Baba replied: Nobody can experience super-sensuous joy even for a second. Once (the experience of) super-sensuous joy begins, it will remain constant for 2500 years. It is not a temporary joy. The joy of bodily organs is temporary. And the super-sensuous joy is forever.

समय – 39.10–42.00
जिज्ञासु – बाबा एक नया सी.डी. में कहा है – प्रजापिता को शंकर नहीं कहेंगे।
बाबा – प्रजापिता माना पतित और शंकर माना मनन–चिन्तन मंथन में, आकारी स्टेज में रहने वाला। पतित आत्मा विचार–सागर–मंथन करेगी? करेगी? (किसी ने कहा – नहीं करेगी) जो पतित बनता है या जिस दिन भी पतितपने का अनुभव होता है उस दिन ज्ञान बुद्धि में रह जाता है या उड़ जाता है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 39.10-42.00
Someone said: Baba has said in a new CD that Prajapita will not be called Shankar.
Baba said: Prajapita means sinful and Shankar means the one who remains in a stage of thinking and churning, in a subtle stage. Will a sinful soul churn the ocean of thoughts? Will it? (Someone said – It won't) Whoever becomes sinful or whichever day someone experiences sinfulness, does the knowledge remain in the intellect that day or does it vanish?

जिज्ञासु – पर बाबा ने कहा सौ परसेंट पतित बनें बिगर कोई पावन नहीं बन सकता। बाबा – अभी पुरूषार्थ कौनसा करना है? पतित बनने का पुरूषार्थ करना है या पावन बनने का पुरूषार्थ करना है? (किसी ने कहा – पावन बनने का पुरूषार्थ करना है) अरे अभी क्या बोला? अभी क्या बोला? दुबारा रिपीट करो। क्या बुद्वि में बैठा हुआ है? पकड़ा गया।
जिज्ञासु – नहीं बाबा, अभी कहा है ना पतित मनुष्य मनन–चिन्तन नहीं कर सकता।
बाबा – पावन ही कर सकता है। पावन बुद्वि होगी तो उपर उड़ेगी। और पतित बुद्वि होगी तो 5 तत्व की तरफ खिंचेगी।
जिज्ञासु – माना इससे पहले एक प्वाइंट आया इसलिये मैंने पूछा था।

Someone asked: But Baba has said nobody can become pure without becoming hundred percent sinful.
Baba said: What kind of effort should we make now? Should we make effort to become sinful or should we make effort to become pure? (Someone said – We have to make effort to become pure) Arey, what did you say just now? What did you say just now? Repeat it. What is there in your intellect? You have been caught.
Someone said: No, Baba, just now you have said that a sinful human being cannot think or churn.
Baba said: Only the pure one can do. If the intellect is pure, then it will flyhigh. And if the intellect is sinful, then it will be pulled towards the five elements.
Someone said: I mean to say that earlier a point was mentioned, that is why I asked about this.

समय – 40.45–42.35
जिज्ञासु – बाबा 12 ज्योर्तिलिंगों की पूजा होती है। और एक नया सी.डी. में कहा है 8 के सिवाय सब दैत्य हैं।
बाबा – तो?
जिज्ञासु – तो फिर चार का पूजा हो रहा है तो फिर उनको दैत्य की लिस्ट में कैसे लिया गया?
बाबा – जो शिव है वो तीन मूर्तियों के रूप में आता है या दो मूर्तियों के रूप में आता है? (किसी ने कहा – तीन मूर्तियों के रूप में आता है।) तीन मूर्तियों के रूप में आता है। उनमें से एक मूर्ति जो सबसे नीचे दिखाई जाती है वो नीचे स्तर का काम करेगी या उंचे स्तर का या मीडियम स्तर का काम करेगी? (किसी ने कहा – नीचे स्तर का) वो चार मूर्तियां हैं। (किसी ने कहा – माना उनमें भी बाप की प्रवेशता है ना जैसे, पालना)...

Time: 40.45-42.35
Someone said: Baba 12 *Jyotirlingams* are worshipped. And in a new CD it has been said that all are demons except for the 8 (deities).
Baba said: So what?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Someone asked: So then, the four (i.e. the last four among the 12 Suryavanshis) are being worshipped; so then how have they been included in the list of demons?
Baba said: Does Shiv come in the form of three persons or does He come in the form of two persons? (Someone said – He comes in the form of three persons) He comes in the form of three persons. Among them, will the person, who is shown in the lowermost section, perform a low level task or will it perform a high level or medium level task? (Someone said – of a lower level) They are the four persons. (Someone said – It means that the Father enters in them too; doesn't He? For example sustenance)...

....बाबा की प्रवेशता के बगैर तो कोई कार्य ही नहीं हो सकता। लेकिन एक बाप है निराकार शिव ज्योति बिंदू जो सदैव बिन्दु ही है और वो एक ही मुकर्रर रथ में साबित होता है। कोई कह नहीं सकता साबित नहीं कर सकता कि मेरे अंदर शिव बाप है। बाकी ऐसे नहीं है कि और जो 107 मणके हैं माला के वो अपने अंदर उस शक्ति को महसूस नहीं करते, करते हैं। महसूस न करें तो ज्योर्तिलिगम के रूप में उनकी मान्यता भी नहीं हो सकती। वो मान्यता तब होती है जब एक संपन्न बनता है और उनमे प्रवेश करता है। इसलिये बोला है बच्चों में बापदादा प्रवेश कर सकते हैं। माना राम–कृष्ण की आत्मायें प्रवेश कर सकती हैं। लेकिन मुकर्रर रूप में सिर्फ शिव ही एक में प्रवेश करता है।

....No task can be accomplished without the entry of Baba. But one Father is the incorporeal point of light Shiv, who is always a point and He is proved to come only in one appointed chariot (*mukarrar rath*). Nobody can say, nobody can prove that Father Shiv is present in him. But it is not so that the other 107 beads of the rosary do not experience that power within them. They do. If they do not experience it, then they can't be recognized as a *Jyotirlingam* too. They get that recognition when 'one' becomes perfect and enters in them. That is why it has been said that Bapdada can enter the children. It means that the souls of Ram and Krishna can enter them. But in an appointed form only Shiv enters in one.

समय – 47.01–49.09
जिज्ञासु – बाबा मुगलों की दस–दस बादशाही चली है। तो फिर उसमें जब बाप, जब बाबर बनता है मुगल साम्राज्य में। तो फिर उनका जो साम्राज्य जैसे विस्तार होता है। जैसे अष्ट देवों को भी लिया जायेगा क्या? और 108 से भी लिया जायेगा क्या? या फिर 16000 से भी लिया जायेगा, उस राज्य में जो बाबर बनकर शुरूवात होती है मुगलों के वंश (की)। तो फिर उसमें किन–किन्हों को लिया जायेगा बाबर के राज्य में?

Time: 47.01-49.09
Someone asked – Baba, there have been ten emperorships of Mughals. So, then, when the father becomes Babar in the Mughal kingdom, his empire undergoes expansion. Then will the eight deities also be included (into the empire)? And will those from the 108 also be taken? Or will the souls from among the 16000 also be included in the kingdom established by Babar, in the Mughal dynasty? So, who all will be included in the kingdom of Babar?

बाबा – जो भी राजा बनता है वो अपने नज़दीक वालों को पहले उठाता है या दूरवालों को पहले उठावेगा? है? नजदीक वालों को ही उठावेगा। इब्राहिम, बुद्व या क्राइस्ट जब इस सुष्टि पर आते है, तो उनके पीछे–पीछे जो फालोअर्स आते है, उन फालोअर्स को पहले राजाई देगा या जिनमें प्रवेश करता है उनको राजाई देगा? परम्परा क्या रही है? सारी परम्पराएं भारत से शुरू होती हैं। भारत मे सृष्टि की पैदाइश करने के लिये जिस माता का आधार लिया जाता

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

है वो माता वारिसदार बनती है या बच्चे वारिसदार बनते है? (किसी ने कहा – बच्चे वारिसदार बनते हैं) ऐसे ही उपर से आने वाले धर्मपितायें जिसका आधार लेते हैं, उसको दासी बना करके रखते हैं, दास बना करके रखते हैं। इसलिये बोला है स्वधर्मे निधनम श्रेय परधर्मो भयावह। दूसरे का धर्म बहुत दुख देने वाला है। अपने धर्म में जीतेजी मर जाना अच्छा है। दूसरे का धर्म कभी स्वीकार नहीं करना चाहिये।

Baba replied: Whoever becomes a king, does he first uplift those who are close to him or will he first uplift those who are far from him? He will uplift only those who are close to him. When Abraham, Buddha, Christ come in this world, their followers come (from the soul world) behind them. Will he (i.e. the religious father) give kingship first to those followers (who come after him from the soul world) or will he give kingship to the one in whom he enters? What has been the tradition (*paramparaa*)? All the traditions begin from India. In India, does the mother, whose support is taken for creation, become an heir (*vaarisdaar*) or do the children become heirs? (Someone said – the children become heirs) Similarly, the souls, whose support is taken by the religious fathers coming from above, are kept as maid servants and servants. That is why it has been said – *Swadharmey nidhanam shreya pardharmo bhayaavah.* Others' religion causes a lot of sorrow. It is better to die while being alive in one's own religion. One should never accept others' religion.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info